



Bharti singh

03 Jul 1984

02:30 AM

Amritsar

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 2-03/07/1984
दिन _____: सोम-मंगलवार
जन्म समय _____: 02:30:00 घंटे
इष्ट _____: 52:31:35 घटी
स्थान _____: Amritsar
राज्य _____: Punjab
देश _____: India

अक्षांश _____: 31:35:00 उत्तर
रेखांश _____: 74:56:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:30:16 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 01:59:44 घंटे
वेलान्तर _____: -00:03:59 घंटे
साम्पातिक काल _____: 20:44:03 घंटे
सूर्योदय _____: 05:29:21 घंटे
सूर्यास्त _____: 19:39:04 घंटे
दिनमान _____: 14:09:43 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वर्षा
सूर्य के अंश _____: 17:29:27 मिथुन
लग्न के अंश _____: 02:03:27 वृष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: वृष - शुक्र
राशि-स्वामी _____: सिंह - सूर्य
नक्षत्र-चरण _____: मघा - 3
नक्षत्र स्वामी _____: केतु
योग _____: सिद्धि
करण _____: बव
गण _____: राक्षस
योनि _____: मूषक
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: वनचर
वर्ग _____: मूषक
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: मू-मुक्ता
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कर्क

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1906	आषाढ़	12
पंजाबी	संवत : 2041	आषाढ़	20
बंगाली	सन् : 1391	आषाढ़	19
तमिल	संवत : 2041	आनी	20
केरल	कोल्लम : 1159	मिथुनम	19
नेपाली	संवत : 2041	आषाढ़	20
चैत्रादि	संवत : 2041	आषाढ़	शुक्ल 5
कार्तिकादि	संवत : 2041	आषाढ़	शुक्ल 5

पंचांग

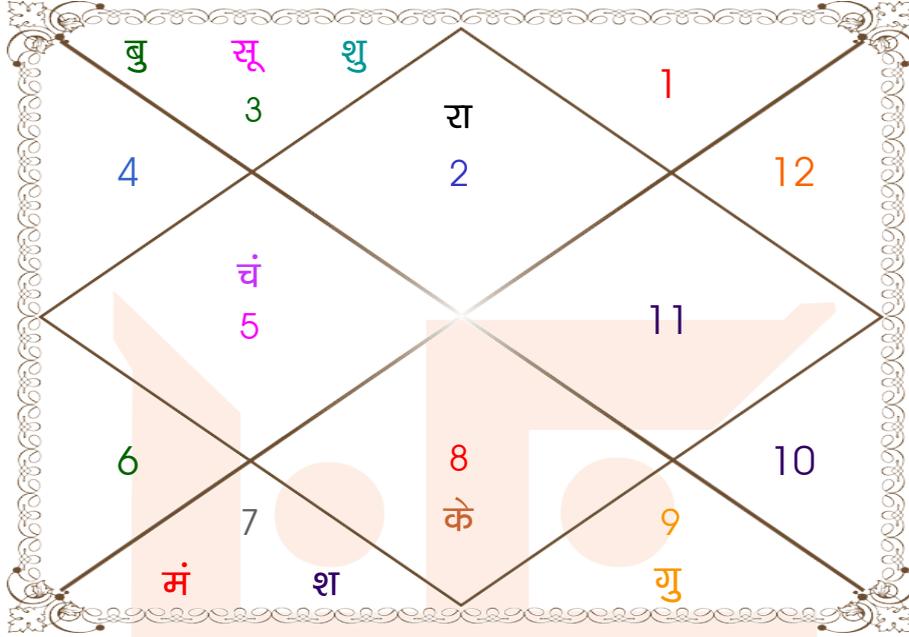
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 4
तिथि समाप्ति काल _____ : 23:18:00
जन्म तिथि _____ : 5
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : आश्लेषा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 14:24:10 घंटे
जन्म योग _____ : मघा
सूर्योदय कालीन योग _____ : वज्र
योग समाप्ति काल _____ : 19:03:22 घंटे
जन्म योग _____ : सिद्धि
सूर्योदय कालीन करण _____ : वणिज
करण समाप्ति काल _____ : 12:38:41 घंटे
जन्म करण _____ : बव
भयात _____ : 30:14:33
भभोग _____ : 55:18:02
भोग्य दशा काल _____ : केतु 3 वर्ष 2 मा 1 दि

घात चक्र

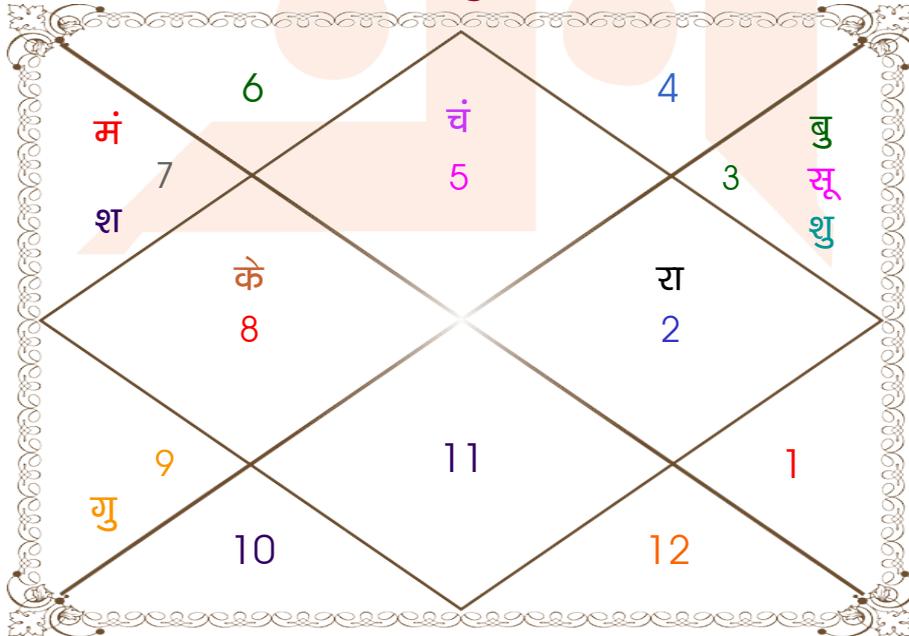
मास _____ : ज्येष्ठ
तिथि _____ : 3-8-13
दिन _____ : शनिवार
नक्षत्र _____ : मूल
योग _____ : धृति
करण _____ : बव
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : मार्जार
लग्न _____ : मीन
सूर्य _____ : धनु
चन्द्र _____ : वृश्चिक
मंगल _____ : मकर
बुध _____ : तुला
गुरु _____ : कुम्भ
शुक्र _____ : मीन
शनि _____ : वृश्चिक
राहु _____ : मेष

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



Meenna Salaria Astro & Numerio

Delhi

9667113751

salaria.meena@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

		रा ल	शु सू बु
			चं
गु	के	श मं	

लग्न कुंडली

शु बु	रा ल		
	सू		
चं		मं श	गु के

विंशोत्तरी
केतु 3वर्ष 2मा 1दि
केतु

03/07/1984

04/09/2100

केतु	04/09/1987
शुक्र	04/09/2007
सूर्य	03/09/2013
चन्द्र	04/09/2023
मंगल	04/09/2030
राहु	03/09/2048
गुरु	03/09/2064
शनि	04/09/2083
बुध	04/09/2100

योगिनी

भद्रिका 2वर्ष 3मा 5दि

उल्का

08/10/2022

07/10/2028

उल्का	08/10/2023
सिद्धा	07/12/2024
संकटा	08/04/2026
मंगला	08/06/2026
पिंगला	08/10/2026
धान्या	09/04/2027
भ्रामरी	08/12/2027
भद्रिका	07/10/2028

Meenna Salaria Astro & Numerio

Delhi

9667113751

salaria.meena@gmail.com

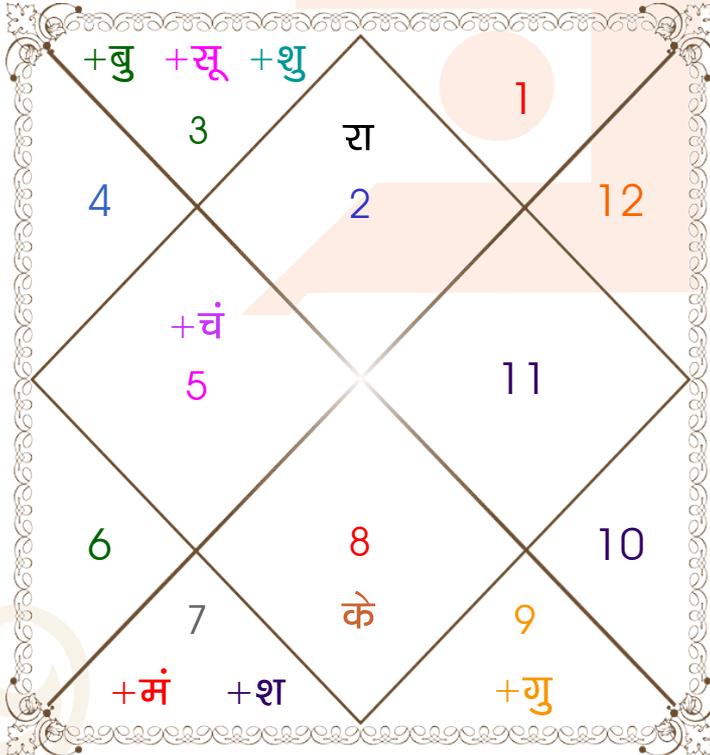
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृष	02:03:27	418:35:43	कृतिका	2	3	शुक्र	सूर्य	गुरु	---
सूर्य			मिथु	17:29:27	00:57:13	आर्द्रा	4	6	बुध	राहु	सूर्य	सम राशि
चंद्र			सिंह	07:17:35	14:28:08	मघा	3	10	सूर्य	केतु	राहु	मित्र राशि
मंगल			तुला	19:11:04	00:10:03	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	चंद्र	सम राशि
बुध			मिथु	28:49:01	01:59:25	पुनर्वसु	3	7	बुध	गुरु	सूर्य	स्वराशि
गुरु	व		धनु	14:01:44	00:07:40	पूर्वाषाढा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	स्वराशि
शुक्र		अ	मिथु	22:08:47	01:13:46	पुनर्वसु	1	7	बुध	गुरु	शनि	मित्र राशि
शनि	व		तुला	16:09:08	00:01:01	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	शुक्र	उच्च राशि
राहु	व		वृष	12:27:18	00:04:00	रोहिणी	1	4	शुक्र	चंद्र	राहु	मित्र राशि
केतु	व		वृश्चि	12:27:18	00:04:00	अनुराधा	3	17	मंगल	शनि	मंगल	मित्र राशि
हर्ष	व		वृश्चि	16:44:04	00:02:00	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	बुध	---
नेप	व		धनु	06:06:03	00:01:35	मूल	2	19	गुरु	केतु	राहु	---
प्लूटो	व		तुला	05:41:25	00:00:13	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	चंद्र	---
दशम भाव			मक	14:56:44	--	श्रवण	--	22	शनि	चंद्र	गुरु	--

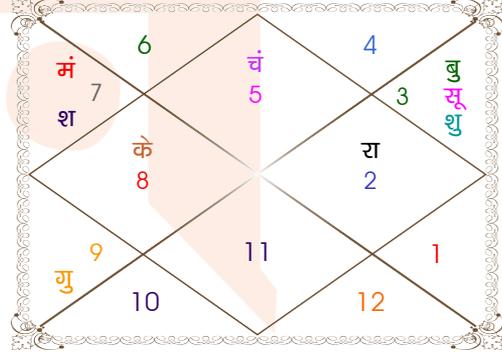
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:38:11

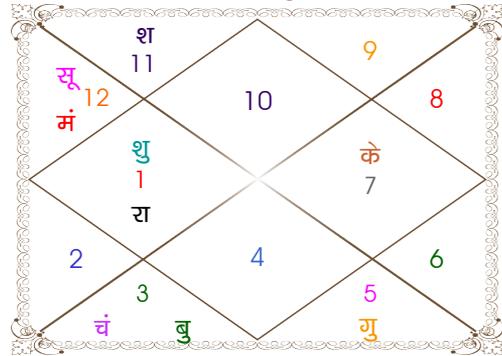
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Meenna Salaria Astro & Numerio

Delhi

9667113751

salaria.meena@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मेष 14:12:19	वृष 02:03:27
2	वृष 14:12:19	वृष 26:21:12
3	मिथुन 08:30:05	मिथुन 20:38:58
4	कर्क 02:47:51	कर्क 14:56:44
5	सिंह 02:47:51	सिंह 20:38:58
6	कन्या 08:30:05	कन्या 26:21:12
7	तुला 14:12:19	वृश्चिक 02:03:27
8	वृश्चिक 14:12:19	वृश्चिक 26:21:12
9	धनु 08:30:05	धनु 20:38:58
10	मकर 02:47:51	मकर 14:56:44
11	कुम्भ 02:47:51	कुम्भ 20:38:58
12	मीन 08:30:05	मीन 26:21:12

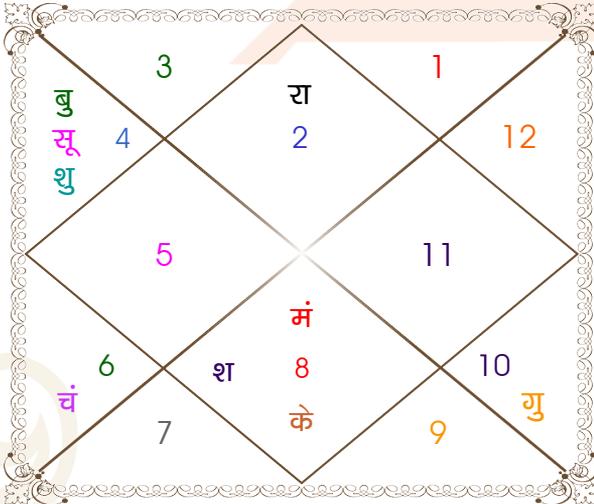
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृष	02:03:27
2	वृष	28:16:24
3	मिथुन	21:03:57
4	कर्क	14:56:44
5	सिंह	13:52:09
6	कन्या	20:52:53
7	वृश्चिक	02:03:27
8	वृश्चिक	28:16:24
9	धनु	21:03:57
10	मकर	14:56:44
11	कुम्भ	13:52:09
12	मीन	20:52:53

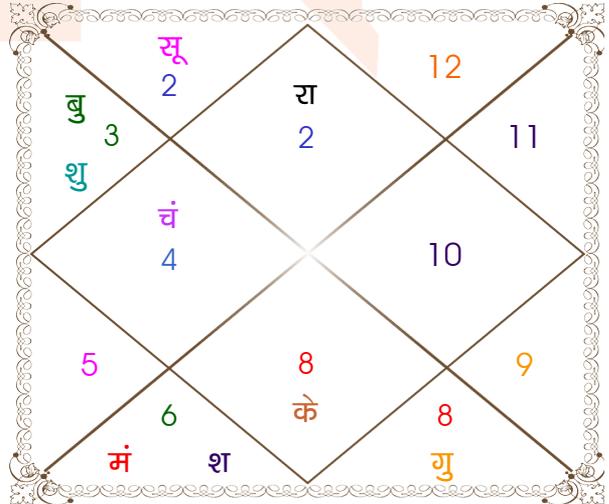
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 3 वर्ष 2 मास 1 दिन

केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष
03/07/1984	04/09/1987	04/09/2007	03/09/2013	04/09/2023
04/09/1987	04/09/2007	03/09/2013	04/09/2023	04/09/2030
00/00/0000	शुक्र 03/01/1991	सूर्य 22/12/2007	चंद्र 05/07/2014	मंगल 31/01/2024
00/00/0000	सूर्य 04/01/1992	चंद्र 22/06/2008	मंगल 03/02/2015	राहु 18/02/2025
00/00/0000	चंद्र 03/09/1993	मंगल 28/10/2008	राहु 04/08/2016	गुरु 24/01/2026
00/00/0000	मंगल 04/11/1994	राहु 22/09/2009	गुरु 04/12/2017	शनि 05/03/2027
03/07/1984	राहु 03/11/1997	गुरु 11/07/2010	शनि 05/07/2019	बुध 01/03/2028
राहु 22/08/1984	गुरु 04/07/2000	शनि 23/06/2011	बुध 03/12/2020	केतु 29/07/2028
गुरु 29/07/1985	शनि 04/09/2003	बुध 28/04/2012	केतु 05/07/2021	शुक्र 28/09/2029
शनि 07/09/1986	बुध 05/07/2006	केतु 03/09/2012	शुक्र 05/03/2023	सूर्य 03/02/2030
बुध 04/09/1987	केतु 04/09/2007	शुक्र 03/09/2013	सूर्य 04/09/2023	चंद्र 04/09/2030

राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष
04/09/2030	03/09/2048	03/09/2064	04/09/2083	04/09/2100
03/09/2048	03/09/2064	04/09/2083	04/09/2100	00/00/0000
राहु 17/05/2033	गुरु 22/10/2050	शनि 07/09/2067	बुध 31/01/2086	केतु 31/01/2101
गुरु 10/10/2035	शनि 05/05/2053	बुध 17/05/2070	केतु 28/01/2087	शुक्र 02/04/2102
शनि 16/08/2038	बुध 11/08/2055	केतु 26/06/2071	शुक्र 28/11/2089	सूर्य 08/08/2102
बुध 05/03/2041	केतु 16/07/2056	शुक्र 26/08/2074	सूर्य 04/10/2090	चंद्र 09/03/2103
केतु 23/03/2042	शुक्र 17/03/2059	सूर्य 07/08/2075	चंद्र 05/03/2092	मंगल 05/08/2103
शुक्र 23/03/2045	सूर्य 04/01/2060	चंद्र 08/03/2077	मंगल 02/03/2093	राहु 04/07/2104
सूर्य 15/02/2046	चंद्र 05/05/2061	मंगल 17/04/2078	राहु 19/09/2095	00/00/0000
चंद्र 17/08/2047	मंगल 11/04/2062	राहु 21/02/2081	गुरु 25/12/2097	00/00/0000
मंगल 03/09/2048	राहु 03/09/2064	गुरु 04/09/2083	शनि 04/09/2100	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 3 वर्ष 2 मा 2 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - गुरु 18/02/2025 24/01/2026	मंगल - शनि 24/01/2026 05/03/2027	मंगल - बुध 05/03/2027 01/03/2028	मंगल - केतु 01/03/2028 29/07/2028	मंगल - शुक्र 29/07/2028 28/09/2029
गुरु 04/04/2025 शनि 28/05/2025 बुध 15/07/2025 केतु 04/08/2025 शुक्र 30/09/2025 सूर्य 17/10/2025 चंद्र 14/11/2025 मंगल 04/12/2025 राहु 24/01/2026	शनि 30/03/2026 बुध 26/05/2026 केतु 19/06/2026 शुक्र 25/08/2026 सूर्य 14/09/2026 चंद्र 18/10/2026 मंगल 11/11/2026 राहु 10/01/2027 गुरु 05/03/2027	बुध 26/04/2027 केतु 17/05/2027 शुक्र 16/07/2027 सूर्य 03/08/2027 चंद्र 02/09/2027 मंगल 23/09/2027 राहु 17/11/2027 गुरु 04/01/2028 शनि 01/03/2028	केतु 10/03/2028 शुक्र 04/04/2028 सूर्य 11/04/2028 चंद्र 24/04/2028 मंगल 03/05/2028 राहु 25/05/2028 गुरु 14/06/2028 शनि 07/07/2028 बुध 29/07/2028	शुक्र 08/10/2028 सूर्य 29/10/2028 चंद्र 03/12/2028 मंगल 28/12/2028 राहु 02/03/2029 गुरु 28/04/2029 शनि 05/07/2029 बुध 03/09/2029 केतु 28/09/2029
मंगल - सूर्य 28/09/2029 03/02/2030	मंगल - चंद्र 03/02/2030 04/09/2030	राहु - राहु 04/09/2030 17/05/2033	राहु - गुरु 17/05/2033 10/10/2035	राहु - शनि 10/10/2035 16/08/2038
सूर्य 04/10/2029 चंद्र 15/10/2029 मंगल 22/10/2029 राहु 10/11/2029 गुरु 27/11/2029 शनि 18/12/2029 बुध 05/01/2030 केतु 12/01/2030 शुक्र 03/02/2030	चंद्र 20/02/2030 मंगल 05/03/2030 राहु 06/04/2030 गुरु 04/05/2030 शनि 07/06/2030 बुध 07/07/2030 केतु 19/07/2030 शुक्र 24/08/2030 सूर्य 04/09/2030	राहु 30/01/2031 गुरु 10/06/2031 शनि 13/11/2031 बुध 01/04/2032 केतु 28/05/2032 शुक्र 09/11/2032 सूर्य 28/12/2032 चंद्र 20/03/2033 मंगल 17/05/2033	गुरु 11/09/2033 शनि 27/01/2034 बुध 01/06/2034 केतु 22/07/2034 शुक्र 15/12/2034 सूर्य 28/01/2035 चंद्र 11/04/2035 मंगल 01/06/2035 राहु 10/10/2035	शनि 23/03/2036 बुध 18/08/2036 केतु 17/10/2036 शुक्र 09/04/2037 सूर्य 31/05/2037 चंद्र 26/08/2037 मंगल 25/10/2037 राहु 31/03/2038 गुरु 16/08/2038
राहु - बुध 16/08/2038 05/03/2041	राहु - केतु 05/03/2041 23/03/2042	राहु - शुक्र 23/03/2042 23/03/2045	राहु - सूर्य 23/03/2045 15/02/2046	राहु - चंद्र 15/02/2046 17/08/2047
बुध 26/12/2038 केतु 19/02/2039 शुक्र 24/07/2039 सूर्य 08/09/2039 चंद्र 25/11/2039 मंगल 18/01/2040 राहु 06/06/2040 गुरु 08/10/2040 शनि 05/03/2041	केतु 27/03/2041 शुक्र 30/05/2041 सूर्य 18/06/2041 चंद्र 20/07/2041 मंगल 12/08/2041 राहु 08/10/2041 गुरु 28/11/2041 शनि 28/01/2042 बुध 23/03/2042	शुक्र 22/09/2042 सूर्य 16/11/2042 चंद्र 15/02/2043 मंगल 20/04/2043 राहु 01/10/2043 गुरु 24/02/2044 शनि 16/08/2044 बुध 18/01/2045 केतु 23/03/2045	सूर्य 08/04/2045 चंद्र 06/05/2045 मंगल 25/05/2045 राहु 13/07/2045 गुरु 26/08/2045 शनि 17/10/2045 बुध 03/12/2045 केतु 22/12/2045 शुक्र 15/02/2046	चंद्र 01/04/2046 मंगल 03/05/2046 राहु 25/07/2046 गुरु 06/10/2046 शनि 31/12/2046 बुध 19/03/2047 केतु 20/04/2047 शुक्र 20/07/2047 सूर्य 17/08/2047

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

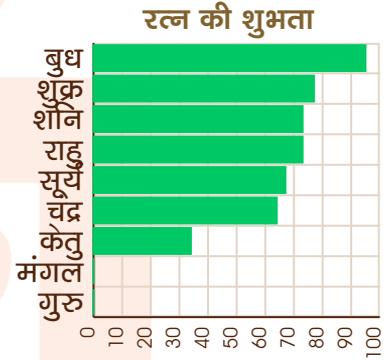
मूलांक	3
भाग्यांक	5
मित्र अंक	3, 5, 7, 9
शत्रु अंक	1, 4, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृश्चिक, मेष
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	सूर्य
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	95%	धन, सन्तति सुख
हीरा	शुक्र	77%	धन, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
नीलम	शनि	73%	शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
गोमेद	राहु	73%	स्वास्थ्य, धन
माणिक्य	सूर्य	67%	धन, सुख
मोती	चंद्र	64%	सुख, पराक्रम
लहसुनिया	केतु	34%	दाम्पत्य कष्ट, शत्रु व रोग
मूंगा	मंगल	0%	शत्रु व रोग, व्यय, दाम्पत्य कष्ट
पुखराज	गुरु	0%	दुर्घटना, हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	04/09/1987	55%	52%	0%	95%	0%	83%	61%	61%	55%
शुक्र	04/09/2007	55%	52%	0%	100%	0%	89%	80%	80%	47%
सूर्य	03/09/2013	80%	70%	0%	95%	0%	64%	61%	61%	9%
चंद्र	04/09/2023	73%	77%	0%	100%	0%	77%	73%	61%	9%
मंगल	04/09/2030	73%	70%	0%	82%	0%	77%	73%	61%	47%
राहु	03/09/2048	55%	52%	0%	95%	0%	83%	80%	86%	9%
गुरु	03/09/2064	73%	70%	0%	82%	0%	64%	73%	73%	34%
शनि	04/09/2083	55%	52%	0%	100%	0%	83%	86%	80%	9%
बुध	04/09/2100	73%	52%	0%	100%	0%	83%	73%	73%	34%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	21/12/1984-01/06/1985 17/09/1985-17/12/1987	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/06/1995-10/08/1995 16/02/1996-17/04/1998	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	10/09/2009-15/11/2011 16/05/2012-04/08/2012	-----

द्वितीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041	-----

तृतीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066 03/07/2066-30/08/2068	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	दाम्पत्य कलह
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	धनार्जन
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	सम	पराक्रम हानि
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	सुख हानि
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	शुभ	सन्तति

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति षष्ठ भाव में है। यह भाव शत्रु रोग तथा ऋण आदि का प्रतिनिधित्व करने वाला भाव है। अतः इस भाव में मंगल के प्रभाव से आप एक पराकमी महिला होंगी तथा शत्रु या प्रतिद्वन्दियों को पराजित करने में समर्थ रहेंगी। साथ ही शरीर में रोगाभाव रहेगा एवं सामान्यतया आप स्वस्थता की ही अनुभूति करेंगी। आप पराकमी एवं कठोर कार्यों को सम्पन्न करने में रुचिशील रहेंगी। अतः आप (या कार्यरत न होने पर आपके पति) पुलिस सेना या अन्य पराकमी विभागों में कार्यरत हो सकती हैं। जीवन में ऋण आदि लेने की आपको कम ही आवश्यकता पड़ेगी तथा यदि लेंगी भी तो वापस करने में विशेष कठिनाई नहीं होगी जिससे मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा बनी रहेगी। साथ ही आप जीवन में इच्छित धन ऐश्वर्य एवं लाभ भी अर्जित करेंगी। आपके प्रभावी व्यक्तित्व से सभी लोग प्रभावित रहेंगे।

षष्ठ भाव से नवम भाव पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से धर्म एवं धार्मिक कार्यकलापों में आपकी अल्प मात्रा में ही रुचि रहेगी तथा भाग्य की अपेक्षा आप कार्य करने पर अधिक विश्वास करेंगी। अतः आपके सांसारिक कार्यों की सिद्धि भाग्यबल की अपेक्षा परिश्रम पूर्वक कर्म करने से ही पूर्ण होगी। द्वादश भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से आपका व्यय अधिक होगा तथा जीवन में शुभाशुभ दोनों प्रकार के व्ययों को करने में तत्पर रहेगी। यदा कदा आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा लेकिन इनको दूर करने में आप समर्थ रहेंगी साथ ही दाम्पत्य सुख का आप सामान्य रूप से उपभोग करने में समर्थ होंगी। लग्न पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप समय समय पर गर्मी या रक्त विकार संबंधी परेशानी की अनुभूति कर सकती है लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप अपने समस्त कार्यों को उत्साह पराक्रम एवं परिश्रम से सम्पन्न करके उनमें इच्छित सफलताएं अर्जित करेंगी।

इस प्रकार षष्ठ भावस्थ मंगल की स्थिति आपके लिए सामान्यतया अच्छी रहेगी जिसके प्रभाव से आप धनऐश्वर्य से युक्त रहेंगी तथा परिवार का आधुनिक परिवेश में लालन पालन करने में समर्थ रहेंगी। जिससे पारिवारिक सुख शान्ति बनी रहेगी तथा उनसे आप पूर्ण सुख एवं सहयोग को प्राप्त करेंगी। अतः प्रसन्नता पूर्वक आप अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगी।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाद्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाद्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में अनन्त नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। इसके कारण जातक को व्यक्तित्व निर्माण एवं आगे बढ़ने में आंशिक रूप से संघर्ष करना पड़ता है। कभी-कभी विरक्ति पैदा होती है। गृहस्थ जीवन कुछ अस्तव्यस्त रहता है। न्यायालय से थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी दुःखमय बन जाता है। जीवन में समय-समय पर आंशिक रूप में बाधाएँ आती हैं। परन्तु कालान्तर में सभी विघ्न-बाधाएँ दूर होती चली जाती हैं। जीवन में अनेक बार अपयश मिलने का भय बना रहता है। अपने रिश्तेदार नुकसान पहुँचाने की चेष्टा करते हैं, परन्तु उसमें वे सफल नहीं होते। जातक बार-बार अपने कार्य को बदलता है। परिणामस्वरूप आंशिक रूप में कभी क्षति उठानी पड़ती है। खासकर साहूकारी के व्यवसाय में नुकसान उठता है। लेकिन जातक के जीवन में एक चमत्कारिक समय भी आता है। और समय-समय पर शुभ कार्य सम्पादित होते रहते हैं। आर्थिक स्थिति थोड़ा नाजुक होती है। इस योग के कारण जातक थोड़ा बहुत पराक्रमहीन, आलसी एवं नीचकर्म करने में तत्पर हो जाता है।

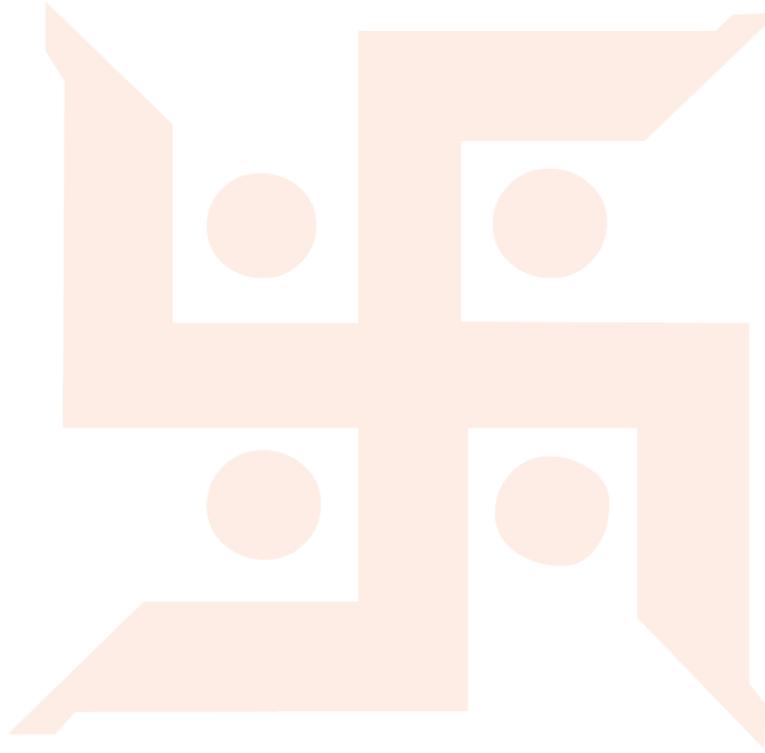
यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन्, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर,

रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



Meenna Salaria Astro & Numerio

Delhi

9667113751

salaria.meena@gmail.com

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृओं का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुण्डली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी ।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं । यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं । त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है । अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है ।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है । इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है । यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं ।

ग्रह फल

सूर्य

द्वितीय भाव में सूर्य हो तो जातक भाग्यवान्, सम्पत्तिवान्, मुखरोगी, झगड़ालू, नेत्रकर्णदन्तरोगी, राजभीरु, घरेलू जीवन दुःखी एवं स्त्री के लिए कुटुम्बियों से झगड़ने वाला होता है।

मिथुन राशि में रवि हो तो जातक धनवान्, ज्योतिषी, इतिहास प्रेमी उदार, विवेकी, विद्वान्, बुद्धिमान, मधुरभाषी, नम्र एवं प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं उनकी आयु भी दीर्घ होगी। आपको वे सर्वदा विशेष स्नेह प्रदान करेंगे। साथ ही महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपको उनसे आर्थिक सहयोग भी प्रायः मिलता रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी तथा उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प तनाव दृष्टिगोचर होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए ही रहेगा कुछ समय उपरान्त स्वतः सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही सुख दुःख में आप उनकी आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

चन्द्र

चतुर्थभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सुखी, मानी, दानी, उदार, रोगरहित, राजद्वेषवर्जित, कृषक, विवाह के पश्चात् भाग्योदयी, जलजीवी एवं बुद्धिमान होता है।

सिंह राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दृढदेही, दाँत तथा पेट का रोगी, मातृभक्त, अल्पसन्ततिवान्, गम्भीर, दानी, साहसी, शान दिखाने वाला अभिमानी, महत्वाकांक्षी एवं पुराने विचारों वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में स्थित हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक व्याकुलता की उनको अनुभूति नहीं होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा वाहनादि सुख से वे युक्त रहेंगी तथा आपकी सुख समृद्धि एवं सुखसंसाधनों की प्राप्ति के लिए नित्य आपका आर्थिक तथा अन्य तरफ से सहयोग करती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति असीम निष्ठा एवं आदर का भाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार से सुख प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। एवं उनकी आज्ञा का पालन भी नित्य करती रहेंगी। इस प्रकार आप माता के लिए शुभ ही रहेंगी।

मंगल

छटेभाव में मंगल हो तो जातक बलवान्, धैर्यशाली, प्रबल जठराग्नि, कुलवन्त, प्रचण्ड शक्ति, शत्रुहन्ता, ऋणी, दादरोगी, कोधी, पुलिस अफसर, व्रण और रक्तविकार युक्त एवं अधिकव्यय करने वाला होता है।

तुला राशि में मंगल हो तो जातक प्रवासी, वक्ता, कामी, परधनहारी, उच्चाकांक्षी, लड़ाकू, कृपालु एवं परस्त्रियों की ओर झुकाव होता है।

आपके जन्म समय में मंगल छटे भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों की आप प्रिय रहेंगी एवं उनसे सम्मान एवं स्नेह की नित्य आपको प्राप्ति होती रहेगी। उनका स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति होती रहेगी। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको अपनी ओर से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। सुख दुःख में वे पूर्ण रूपेण आपके साथ रहेंगे एवं शत्रु वर्ग से आपकी यत्नपूर्वक सुरक्षा करेंगे।

आपका भी उनके प्रति हार्दिक प्रेम रहेगा एवं उनके कल्याण संबंधी कार्यो को करने में तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प मात्रा में कटुता का भी आभास होगा लेकिन कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करके अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

बुध

द्वितीयभाव में बुध हो तो जातक सुखी, सुन्दर, वक्ता, साहसी, सत्कार्यकारक, संही, दलाल या वकील का पेशा करने वाला, मिष्टाभभोजी, गुणी एवं मितव्ययी होता है।

मिथुन राशि में बुध हो तो जातक मधुरभाषी, शास्त्रज्ञ, लब्धप्रतिष्ठ, वक्ता, लेखक, अल्पसन्ततिवाला, विवेकी, सदाचारी, खोज के काम में चतुर, दीर्घायु, यात्रा का शौकीन, संगीत में रुचि एवं हास परिहास करने वाला होता है।

गुरु

अष्टमभाव में गुरु हो तो जातक दीर्घायु, नम्रव्यवहार, लेखक, सुखी, शान्त, मधुरभाषी, विवेकी, ग्रन्थकार, कुलदीपक, ज्योतिषप्रेमी, मित्रों द्वारा धननाशक, गुप्तरोगी एवं लोभी होता है।

धनु राशि में गुरु हो तो जातक धनी, प्रभावशाली, विद्वान्, विश्वस्त, सज्जन, दानशील संगठनकर्ता, अच्छा वक्ता, धर्माचार्य, दम्भी, रतिप्रेमी एवं धूर्त होता है।

शुक्र

द्वितीयभाव में शुक्र हो तो जातक भाग्यवान्, साहसी, समयज्ञ, मिष्टान्नभोजी, यशस्वी, लोकप्रिय, जौहरी, दीर्घजीवी, कवि, कुटुम्बयुक्त, सुखी एवं धनवान् होता है।

मिथुन राशि में शुक्र हो तो जातक कवि, साहित्यिक, चित्रकला निपुण, साहित्यिक स्रष्टा, प्रेमी, सज्जन, लोकहितैषी धनी, उदार, सम्मानित, कुशाबुद्धि, विद्वान् एवं परस्त्रियों में रुचि रखने वाला होता है।

शनि

षष्ठभाव में शनि हो तो जातक बलवान्, आचारहीन, व्रणी, जातिविरोधी, श्वासरोगी, कण्ठरोगी, योगी, शत्रुहन्ता भोगी एवं कवि होता है।

तुला राशि में शनि हो तो जातक राजनीति में रुचि रखने वाला, प्रसिद्धनेता, धनी, सम्मानित शक्तिशाली, दानशील, परस्त्रियों में रुचि, सुभाषी, यशस्वी, स्वाभिमानी एवं उन्नतिशील होता है।

राहु

लग्न (प्रथम) में राहु हो तो जातक कामी, दुर्बल, मनस्वी, अल्पसन्तति युक्त, राजद्वेषी, नीचकर्मरत दुष्ट, स्तकरोगी, स्वार्थी एवं बात-बात पर सन्देह करने वाला होता है।

वृष राशि में राहु हो तो जातक सुखी, चंचल, कुरूप, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं धनी होता है।

केतु

सप्तम भाव में केतु हो तो जातक मतिमन्द, मूर्ख, दुःखद विवाहित जीवन, पति-पत्नी में सम्बन्ध विच्छेद, शत्रुभीरु एवं सुखहीन होता है।

वृश्चिक राशि में केतु हो तो जातक धूर्त, वाचाल, कुष्ठरोगी, क्रोधी निर्धन एवं व्यसनी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- मंगल
(04/09/2023 - 04/09/2030)

मंगल की महादशा 04/09/2023 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 04/09/2030 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल षष्ठम भाव में स्थित है। मंगल की दृष्टि बारहवे भाव, लग्न तथा नवम भाव पर है। इसके पहले आपकी 10 वर्ष की चन्द्रदशा चल रही थी। आपको समृद्धि की प्राप्ति हुई होगी, आपकी यात्रा हुई होगी और धन तथा धार्मिक कार्यों की ओर झुकाव रहा होगा। इस दशा के दौरान विरोधियों पर आपको विजय तथा उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति होगी और विदेशी स्रोतों से संभावित लाभ मिलेगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अपनी शक्ति को कायम रखने के लिए आपको प्रयास करना होगा। कभी-कभी कुछ मौसमी कारणों से आप ज्वर, संक्रामक बीमारी, उच्च रक्तचाप या पेट से सम्बन्धित बीमारी से पीड़ित हो सकते हैं। सुरक्षात्मक उपायों से इन रोगों से मुक्ति हो सकती है; अन्यथा आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

आपका बैंक बैलेंस सृष्ट होगा। आपको विरोधियों या शत्रुओं से लाभ मिलेगा। केस-मुकदमें में विजय होगी और निर्णय आपके पक्ष में होगा। इस दशा में कार्य-क्षेत्र में स्थिति आपके अनुकूल होगी। जीविका के लिए इन्जीनियरिंग, प्रशासनिक सेवा, सैन्य सेवा, चिकित्सा क्षेत्र, रसायनज्ञ के कार्य अथवा सेवा कार्य का चयन कर सकते हैं।

परिवार :

परिवार में आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपकी सन्तान से आपको लाभ होगा। उनसे आपको सुख की प्राप्ति होगी। आपके जीवनसाथी के साथ संबंध सन्तोषजनक रहेंगे। आपकी माता को उनके सम्बन्धियों व छोटी यात्राओं से लाभ होगा। आपके पिता को यश, ख्याति, शक्ति और अधिकार की प्राप्ति होगी। उनके साथ आपका संबंध अच्छा रहेगा। आपके छोटे भाई-बहनों की जमीन-जायदाद में वृद्धि और जीवन-वृत्ति में उन्नति होगी जबकि बड़ों के लिए यह समय परिवर्तन का होगा जो अंततः लाभदायक होगा। मित्रों के चयन के प्रति सावधान रहें।

अन्तर्दशा :

मंगल की मुख्य दशा में आपको शत्रुओं पर विजय मिलेगी तथा स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आगे आनेवाली राहु दशा में कुछ स्वास्थ्य समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा में लाभ तथा संतान से सुख मिलेगा जबकि शनि की अन्तर्दशा में छोटी यात्राएँ और समृद्धि की प्राप्ति होगी। बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप परिवर्तन व लाभ की प्राप्ति होगी जबकि केतु की अन्तर्दशा में कुछ मानसिक तनाव हो सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप साझेदारी में लाभ, विवाद और यात्राएँ होंगी जबकि उसके बाद सूर्य की अन्तर्दशा के

कारण जीवन में उन्नति होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में समृद्धि की प्राप्ति, यात्रा ओर आध्यात्मिक कार्यों की ओर झुकाव होगा।



Meenna Salaria Astro & Numerio

Delhi

9667113751

salaria.meena@gmail.com

**अंतर्दशा :- मंगल - गुरु
(18/02/2025 - 24/01/2026)**

आपकी मंगल की महादशा 04/09/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 18/02/2025 को प्रारंभ होकर 24/01/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

इस अवधि में आप कुछ धन बिना परिश्रम के भी प्राप्त कर सकते हैं। अचानक धन आ सकता है। आर्थिक स्थिति उत्तम होगी। अध्यात्म या पराविद्या में रुचि हो सकती है। उत्तम भोजन और वस्त्र उपलब्ध रहेंगे, परिवार में वातावरण मधुर रहेगा। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। माता से लाभ होगा। समाजसेवा में भाग लेंगे। शुभ कार्यों पर धन खर्च होगा।

आपके जीवनसाथी खूब धन प्राप्त करेंगे। आपके पिता धर्म और अध्यात्म में रुचि लेंगे। माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, वे शत्रुओं पर विजयी होंगी। आपके भाई-बहनों के कार्यालय उत्तम होंगे, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, कर्ज से मुक्ति मिलेगी, कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी।

आपकी संतान को कार्यों में सफलता मिलेगी; शिक्षा के लिए उत्तम समय है।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, लघु यात्राएं हो सकती हैं। परामर्शदाता और व्यापारी धन कमाएंगे।

स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा, मगर उदर रोगों से बचाव आवश्यक है। मामूली व्याधियों को अनदेखा न करें। अरिष्ट से बचाव के लिए ब्रह्माजी की उपासना करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - शनि
(24/01/2026 - 05/03/2027)**

आपके लिए मंगल की महादशा 04/09/2023 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह 24/01/2026 को प्रारंभ होकर 05/03/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में आप शत्रुओं और स्पर्धियों पर विजय प्राप्त करेंगे। जिम्मेदारियों को धैर्य और कार्यकुशलता से निभाएंगे। सफलता अधिकारियों से संघर्ष के उपरांत मिलेगी। खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्रा हो सकती है। समाजसेवा और दान आदि में रुचि रहेगी। लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उत्साह बना रहेगा। अध्ययन और परिश्रम के लिए समय उत्तम है।

आपके जीवनसाथी के खर्चे बढ़ सकते हैं। आपके पिता के सम्मान में वृद्धि होगी। माता को रिश्तेदारों से सुख-सुविधाएं प्राप्त होंगी, लघु यात्राएं होंगी। भाई-बहनों को जायदाद की खरीद-फरोख्त से लाभ होगा, शिक्षा में सफलता मिलेगी, धनी बनेंगे, परिवर्तन हो सकते हैं, अचानक अप्रत्याशित घटना घट सकती है।

आपकी संतान धनी बनेगी, परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यक्षेत्र में सुदृढ़ता आएगी। उच्चाधिकारी प्रशंसा करेंगे। परामर्शदाता धनी बनेंगे। व्यापारी कोई नया कार्य प्रारंभ कर सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शरीर में छोटी-मोटी बीमारियों से प्रतिरोध की शक्ति रहेगी। अरिष्ट से बचाव के लिए शिवजी की आराधना भैरवजी के रूप में करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - बुध
(05/03/2027 - 01/03/2028)**

आपके लिए मंगल की महादशा 04/09/2023 को प्रारंभ हुई थी। इसमें पांचवी अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 05/03/2027 को प्रारंभ होकर 01/03/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, शिक्षा और सम्मान का कारक है।

इस अवधि में आपको कार्यों में सफलता मिलेगी। मित्र आपकी मदद करेंगे। परिवार में सुख रहेगा। मामापक्ष के लोग धनी बनेंगे। व्यापारिक, प्रशासनिक और संगठनात्मक कार्यों से लाभ होगा। सब सुख-सुविधाएं, उत्तम भोजन और वस्त्र उपलब्ध होंगे। संचार माध्यम से लाभ हो सकता है। उच्च पद मिल सकता है; कार्यों में सफलता मिलेगी। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे; अप्रत्याशित लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी को उच्चपद प्राप्त होगा। आपके पिता स्पर्धियों पर विजयी होंगे। माता को विभिन्न माध्यमों से धन प्राप्त होगा। भाई-बहनों को सफलता में बाधाएं आ सकती हैं मगर स्पर्धियों पर विजयी रहेंगे। उनके बहुत से मित्र होंगे; अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं।

आपकी संतान विज्ञान, वाक्विद्या और व्यापार में प्रवीण होगी। परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे सेवारत हैं तो कार्यक्षेत्र में परिवर्तन हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारियों से लाभ होगा। परामर्शदाताओं को निवेश से लाभ होगा, जबकि व्यापारियों के कार्य में कुछ परिवर्तन हो सकता है।

**अंतर्दशा :- मंगल - केतु
(01/03/2028 - 29/07/2028)**

आपके लिए मंगल की महादशा 04/09/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 01/03/2028 को प्रारंभ होकर 29/07/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु नाना और मोक्ष का कारक है।

इस अवधि में आप भूमि, वाहन आदि क्रय कर सकते हैं। माता से संबंध मधुर रहेंगे, उनसे लाभ हो सकता है। शिक्षा में सफलता मिलेगी। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा।

विपरीत लिंग के लोगों से लाभ हो सकता है। जीवनसाथी के माध्यम से भी लाभ हो सकता है। विवाह हो सकता है। आप बहुत लोगों की मदद करेंगे। कोई भी निर्णय लेने से पहले गहराई से विचार करेंगे। अध्यात्म और ज्ञानार्जन में रुचि होगी। उच्चपद मिल सकता है।

आपके जीवनसाथी के सम्मान और पद में वृद्धि होगी। आपके पिता को हर प्रकार से लाभ होगा, सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे, लोकप्रियता मिलेगी। आपकी माता को अचल संपत्ति मिल सकती है; वे प्रसन्न रहेंगी। आपके भाई-बहनों को निवेश से लाभ होगा; मनोरंजक गतिविधियों में भाग लेंगे, उनके पिता से मधुर संबंध रहेंगे।

आपकी संतान लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दृढ़संकल्प का परिचय देगी। अगर से सेवारत हैं तो धनी बनेंगे, सब सुख उपलब्ध होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो लाभ के अवसर मिलेंगे। परामर्शदाता तरक्की करेंगे। व्यापारियों को अच्छा लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। उदरशूल आदि की शिकायत हो सकती है। इस पर गंभीरता से ध्यान दें। अरिष्ट से बचाव के लिए उड़द की दाल और सतनजे का दान दें।

अंतर्दशा :- मंगल - शुक्र (29/07/2028 - 28/09/2029)

आपके लिए मंगल की महादशा 04/09/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अन्तर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 29/07/2028 को प्रारंभ होकर 28/09/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, कला और नफासत का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। उत्तम भोजन, वस्त्र, उपहार प्राप्त करेंगे। परिवार में समृद्धि बढ़ेगी। सुंदर आभूषण और वस्तुएं उपलब्ध रहेंगी। समाजसेवा में रुचि रहेगी। आपका व्यवहार मधुर होगा। वाहन सुख मिलेगा। विवाह से धन का लाभ होगा। प्रसन्नचित्त रहेंगे। साझेदार के माध्यम से या विरासत में अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे। आपके पिता को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। माता को मानसिक और घरेलू सुख रहेगा। भाई-बहन धन का संग्रह कर सकते हैं; कार्यक्षेत्र में स्थिति उत्तम रहेगी।

आपकी संतान प्रतिस्पर्धा में सफल होगी। अगर वे सेवारत हैं तो सम्मान में वृद्धि होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो जनसंपर्क में सफल होंगे। परामर्शदाताओं का सम्मान बढ़ेगा। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी।

सामान्यतः स्वास्थ्य उत्तम होगा। नेत्र और गले की मामूली शिकायत हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए लक्ष्मीजी की आराधना करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - सूर्य
(28/09/2029 - 03/02/2030)**

आपकी मंगल की महादशा 04/09/2023 को प्रारंभ हो रही है। मंगल महादशा के अंतर्गत सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन है। आपके लिए सूर्य की अंतर्दशा 28/09/2029 को प्रारंभ होकर 03/02/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, स्वास्थ्य और ऊर्जा का कारक है।

इस अवधि में आपको धन की प्राप्ति होगी। रुके हुए काम पूर्ण होंगे। प्रसन्नता मिलेगी। आपकी वाक्शक्ति उत्तम रहेगी; व्यक्तित्व प्रभावशाली होगा। उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं। धन की बचत कम होगी। धन कमाने के लिए परिश्रम करना होगा। धर्म, अध्यात्म और पराविद्या में रुचि होगी। कार्यों में सफलता मिलेगी मगर कुछ उतार-चढ़ाव रहेंगे।

आपके जीवनसाथी को धन, प्रसिद्धि और सम्मान प्राप्त होंगे। पिता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। माता को कार्यों में सफलता मिलेगी। भाई-बहनों को सम्मान और उच्चपद प्राप्त होंगे, धन कमाएंगे। आपकी संतान सम्मानित होगी। अगर वे सेवारत हैं तो धन, सफलता और प्रोन्नति का योग है।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकता है, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को लाभ होगा; कार्यक्षमता उत्तम रहेगी। व्यापारियों को लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। नेत्रों का ध्यान रखें। शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य के गायत्री मंत्र का जाप करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - चंद्र
(03/02/2030 - 04/09/2030)**

आपके लिए मंगल की महादशा 04/09/2023 को प्रारंभ हुई और को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र अंतर्दशा 7 मास की होगी और 03/02/2030 को प्रारंभ होकर 04/09/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र माता, प्रसन्नता और मस्तिष्क के रुझान का कारक है।

इस अवधि में आप समृद्धि और सुख-सुविधाएं प्राप्त करेंगे। अचल संपत्ति और खेती से धनलाभ हो सकता है। वाहन क्रय कर सकते हैं। निवासस्थान बदल सकते हैं। कार्य में उच्चकोटि की सफलता के कारण सम्मानित होंगे। समाज में कल्याणकारी कार्य करेंगे।

आपके जीवनसाथी को सफलता, धन, प्रसिद्धि मिलेगी। आपके पिता को अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। माता का स्वास्थ्य उत्तम होगा, समाज सेवा करेंगी। भाई-बहनों को घरेलू सुख रहेगा, स्वास्थ्य उत्तम होगा और विस्तृत कार्यों में महारत होगी। आपकी संतान को सफलता के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे सेवारत हैं तो खर्च बढ़ेंगे।

महादशा :- राहु
(04/09/2030 - 03/09/2048)

राहु की महादशा 04/09/2030 को आरम्भ और 03/09/2048 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु प्रथम भाव में स्थित है। इस स्थान से राहु की दृष्टि सातवें भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको सफलता, ख्याति, सम्पत्ति तथा उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति हुई होगी। राहु की वर्तमान दशा में आपको धन की प्राप्ति और शत्रुओं पर विजय मिलेगी तथा स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके शरीर के ऊपरी भाग तथा सिर में कष्ट हो सकता है। आप सरदर्द तथा पित्तदोष से ग्रसित हो सकते हैं और मौसम में परिवर्तन के कारण संक्रामक बीमारी, चर्मरोग, चेहरे पर तथा माथे में फोड़ा आदि हो सकते हैं। इन मामूली शिकायतों को छोड़ आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त अच्छी रहेगी। आपको लाभ और समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपकी धार्मिक, शैक्षिक और वैज्ञानिक उपलब्धियों के कारण आपको सम्पत्ति और प्रतिष्ठा मिलेगी। आपको सट्टे में अच्छा लाभ मिलेगा। राहु की दशा में आपको धन का अचानक लाभ होगा। आपको मित्रों से लाभ हो सकता है। जीविका या व्यवसाय के लिए वायुयान चालन, दवा, कम्प्यूटर, मशीनरी, समुद्री सेवा, वायु-सेना आदि के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। दवा, रसायन, औजार, ड्रग, मशीनरी आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों का स्थानान्तरण हो सकता है जो अन्त में लाभदायक होगा और अचानक लाभ तथा कार्य स्थान में अप्रत्याशित पदोन्नति होगी। व्यापार व्यवसाय से जुड़े लोगों को उच्चाधिकारियों से अच्छा लाभ, कार्य में सफलता तथा आय में वृद्धि होगी। व्यवसाय में उन्नति तथा आर्थिक खुशहाली के लिए यह दशा अत्यन्त उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

चन्द्र की अन्तर्दशा में आपको वाहन का सुख मिलेगा। आपको जीवन का हर सुख मिलेगा। आप अचल तथा भूसम्पत्ति के स्वामी होंगे। इस दशा के दौरान आपकी अनेक यात्राएं होंगी। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी जबकि गुरु की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी। विदेश यात्रा हो सकती है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। इन्जीनियरिंग, गणित, विज्ञान, अन्तरिक्ष अनुसन्धान तथा कम्प्यूटर विज्ञान में आपकी रुचि होगी। आपको आपके प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय मिलेगी और परीक्षा तथा प्रतियोगिता में अच्छा करेंगे। आप में नेतृत्व-गुण और साहस है और आप स्वभाव से स्वतन्त्र हैं। आप चतुर और कूटनीतिज्ञ हैं।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चे भाग्यवान और खुशहाल होंगे। आपका उनके साथ सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपके जीवनसाथी की यात्रा, विदेशियों से सम्पर्क और भौतिक लाभ होगा। आपके जीवन साथी के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपकी माता यात्रा और तीर्थाटन पर जाएंगी और दान-पुण्य का कार्य करेंगी और आपके पिता को सट्टे में लाभ तथा धन में अचानक वृद्धि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को हर प्रकार का लाभ तथा सम्पत्ति मिलेगी। बड़े भाई-बहन साहसी और कठिन परिश्रमी होंगे, उनकी छोटी यात्रा होगी और वे संचार-व्यवस्था के क्षेत्र में सफल होंगे। आपका उनके साथ सम्बन्ध मधुर रहेगा। इस दशा के दौरान आपको अच्छा सम्मान, भौतिक समृद्धि और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के दौरान आपको सम्पत्ति और लाभ, कार्य में सफलता और खुशहाली मिलेगी। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी यात्रा होगी और समृद्धि तथा उच्च शिक्षा की प्राप्ति होगी जबकि शनि की अन्तर्दशा में व्यवसाय में प्रगति और उपार्जन अच्छा होगा। बुध की अन्तर्दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य कुछ खराब होगा, किन्तु ननिहाल से लाभ और छोटी यात्रा होगी। केतु कुछ समस्या दे सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में साझेदारों से लाभ मिलेगा और विवाह होगा जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान बच्चों से सुख और सट्टे में सफलता मिलेगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में आपको माता से लाभ और जीवन का सुख मिलेगा जबकि लग्न स्वामी मंगल की अन्तर्दशा के दौरान यश, ख्याति, उत्तम स्वास्थ्य तथा सफलता मिलेगी।

**अंतर्दशा :- राहु - राहु
(04/09/2030 - 17/05/2033)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 04/09/2030 को प्रारंभ होकर 03/09/2048 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास 12 दिन होगी जो आपके लिए 04/09/2030 को प्रारंभ होकर 17/05/2033 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रूपरेखा आदि का परिचायक है।

राहु छायाग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती। स्थिति के अनुसार यह शुभ या अशुभ हो सकता है। लग्न में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के सप्तम भाग पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप बिना उद्देश्य के इधर-उधर भटक सकते हैं। मित्र और रिश्तेदार आपसे दूर हो सकते हैं क्योंकि आपका व्यवहार शत्रुतापूर्ण हो सकता है। आप स्वार्थी, शक्की, विद्रोही और निम्न कोटि के कर्म करने वाले हो सकते हैं। आपको नकारात्मक विचारों से दूर रहना चाहिए; अपने बल पर कार्य करना चाहिए। स्वास्थ्य दुर्बल हो सकता है, इसके लिए अपरंपरागत उपचार का सहारा ले सकते हैं। विवाह जीवन में तनाव आ सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।